Unit 2: उपभोक्ता व्यवहार और मांग (Part 3)

मांग तथा मांग में परिवर्तन

मांग का अर्थ

इच्छा → अवश्यकता → मांग

मांग (DEMAND) जब हम अपनी आवश्यकता को एक निश्चित कीमत पर निश्चित समय पर एक निश्चित स्थान पर पूर्ण करने के लिए तैयार हो जाते हैं या खर्च करते हैं या खरीद लेते हैं तो उसे हम मांग कहते हैं।

इस प्रकार, एक निश्चित कीमत पर एक उपभोक्ता किसी वस्तु की जितनी मात्रा खरीदने को इच्छुक तथा योग्य होता है, उसे मांगी गई मात्रा कहते हैं।

मांग के अंतर्गत निम्नलिखित पांच तत्व होने चाहिए-

1.किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा।

2.उसे क्रय कर सकने के लिए साधन।

3.साधनों को ब्य करने की तत्परता।

4.वस्तु की इच्छा का कीमत विशेष से संबद्ध होना।

5.मांग का संबंध किसी विशेष समय से होना।

परिभाषाएं

प्रो. जे एस मिल के अनुसार, **"मांग शब्द का अभिप्राय मांगी गई उस मात्रा से लगाया जाता है जो एक निश्चित कीमत पर खरीदी जाती है"।**

बेनहम के अनुसार, **"किसी दी गई कीमत पर वस्तु की मांग वह मात्रा है जो कीमत पर एक निश्चित समय में खरीदी जाती है"।**

प्रो. मेयर्स के अनुसार, **"किसी वस्तु की मांग उन मुद्राओं की तालिका होती है जिन् हें क्रेता एक समय विशेष पर सभी संभव कीमतों पर खरीदने को तैयार रहता है"।**

मांग का वर्गीकरण

मांग को दो वर्गों ***व्यक्तिगत मांग*** तथा ***बाजार मांग*** में बांटा जा सकता है।

व्यक्तिगत मांग (Individual Demand):

एक बस्तु की वह मात्रा जिसे एक उपभोक्ता दी गयी समय अवधि में प्रत्येक संभव कीमत पर खरीदने की इच्छुक और समर्थ है व्यक्तिगत मांग कहते हैं।

मांग तालिका

प्रति इकाई कीमत (₹में)	मांगी गई मात्रा (Q)
10	**10**
8	**20**
6	**30**
4	**40**
2	**50**

मांग वक्र

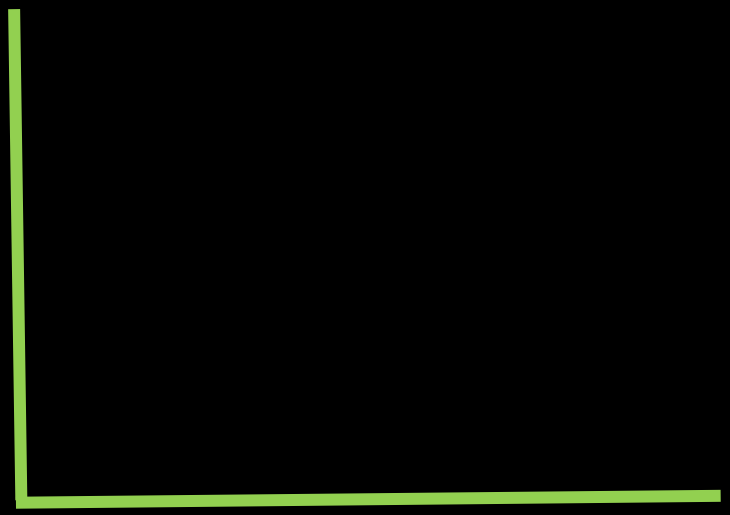

बाजार मांग (Market Demand)

एक वस्तु की वह मात्रा जिसे बाजार में उपस्थित सभी उपभोक्ता दी गई संभव अवधि में प्रत्येक संभव कीमत पर खरीदने को इच्छुक और समर्थ है। बाजार मांग कहलाता है।

मांग तालिका

प्रति इकाई कीमत (₹)	X की मांग	Y की मांग	बाजार मांग (X+Y)
10	10	5	10+5=15
8	20	10	20+10=30
6	30	15	30+15=45
4	40	20	40+20=60
2	50	25	50+25=75

मांग वक्र

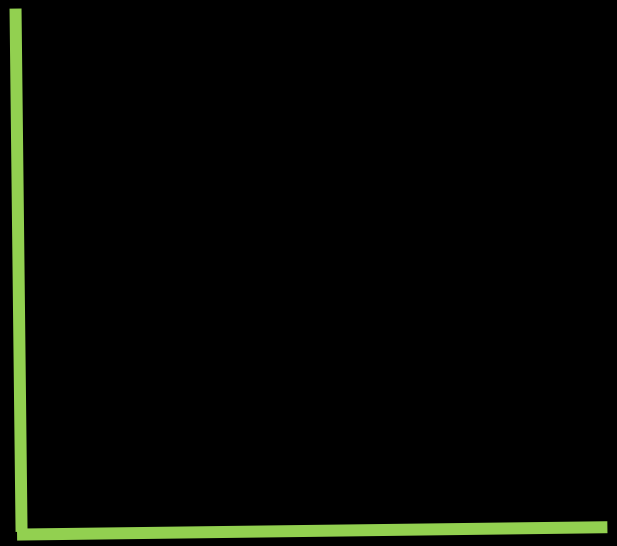

मांग फलन (Demand Function)

वस्तु की मांग उसे प्रभावित करने वाले घटकों के बीच फलानात्मक संबंध को मांग फलन कहते हैं।

प्रो. बाटसन के अनुसार, "किसी बाजार में एक निश्चित समय पर किसी वस्तु का मांग फलन उस वस्तु की खरीदी जा सकने वाले विभिन्न मात्राओं तथा उन मात्रा को निर्धारित करने वाले तत्वों के बीच के संबंध को व्यक्त करता है"।

मांग फलन दो प्रकार का हो सकता है।

- व्यक्तिगत मांग फलन
- बाजार मांग फलन

व्यक्तिगत मांग फलन

व्यक्तिगत मांग फलन बाजार में किसी एक उपभोक्ता की किसी वस्तु के लिए मांग तथा उसके विभिन्न निर्धारक तत्वों के संबंध को प्रकट करता है।

Dx = f (Px, Pr, Y, T)

Dx- वस्तु X की मांग

Px- वस्तु X की कीमत

Pr - संबंधित वस्तुओं की कीमत

Y- उपभोक्ता की आय

T - उपभोक्ता की रुचि

बाजार मांग फलन

बाजार मांग फलन से ज्ञात होता है कि किसी वस्तु की बाजार मांग अथवा वस्तुओं की कुल मांग विभिन्न निर्धारक तत्वों से किस प्रकार से संबंधित है? यह किसी वस्तु की बाजार मांग तथा उसके विभिन्न निर्धारक तत्वों के संबंध को बाजार मांग फलन कहते हैं।

Dx = f(Px, Pr, Y, T, E, P, Yd)

Px- वस्तु X की कीमत

Pr – संबंधित वस्तुओं की कीमत

Y - उपभोक्ता की आय

T - उपभोक्ता की रुचि

E - उपभोक्ताओं को आशाएं

P - जनसंख्या

Yd- आय का वितरण

मांग का नियम (Law of Demand)

इसे खरीद का पहला नियम भी कहते हैं। जो वस्तु की मांग तथा वस्तु के मूल्य के बीच परस्पर संबंध को बताता है।

मांग का नियम बताता है कि **'अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है तथा वस्तु की कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है'।**

इस प्रकार वस्तु की *मांग तथा कीमत में ऋणात्मक संबंध* पाया जाता है।

प्रति इकाई कीमत	मांग की मात्रा
10	10
8	20
6	30
4	40
2	50

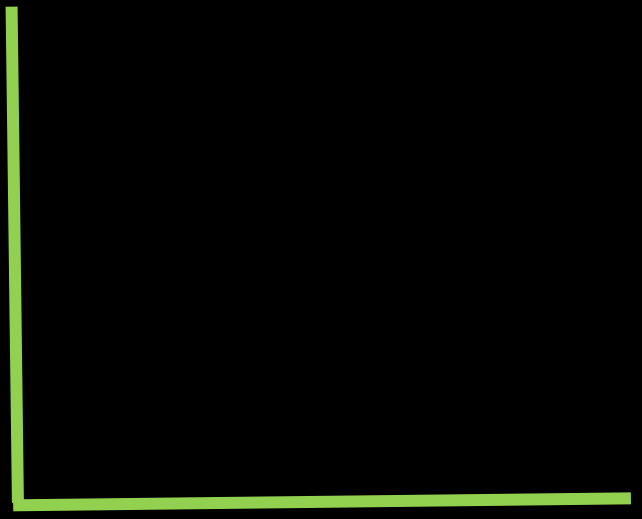

मांग के नियम की मान्यताएँ

- उपभोक्ता की आय स्थिर रहनी चाहिए
- उपभोक्ता की रूचि, आदत और प्रचलन फैशन में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
- संबंधित वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
- वस्तु की कोई नई स्थानापन्न वस्तु बाजार में नहीं होनी चाहिये
- भविष्य में वस्तु के कीमत में परिवर्तन की संभावना नहीं होनी चाहिए

मांग के नियम के अपवाद

- भविष्य में कीमत वृद्धि की संभावना
- सब प्रतिष्ठासूचक वस्तुएँ।
- उपभोक्ता की अज्ञानता।
- गिफ़्फ़िन का विरोधभास।

मांग में परिवर्तन (Change in Demand)

मांग में परिवर्तन की दो स्थितियां होती है:

मांग वक्र पर संचालन

मांग वक्र का खिसकाव

मांग वक्र का संचलन (Movement along a Demand Curve)

अन्य बातों के समान रहने पर केवल कीमत में होने वाले परिवर्तन के कारण जब मांग में परिवर्तन होता है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र सामान रहता है, परंतु वह ऊपर यह नीचे की ओर संचालित होता है।

इस प्रकार मांग में दो प्रकार से परिवर्तन होता है

1. मांग का विस्तार
2. मांग का संकुचन

मांग का विस्तार (Extension of Demand)

अन्य बातों के समान रहने पर जब वस्तु की कीमत में कमी होने से वस्तुओं की अधिक मात्रा खरीदी जाती है। तब उपभोक्ता अपने उसी मांग वक्र पर दाएँ या नीचे की ओर स्थानांतरित होता है। इस स्थिति को मांग का विस्तार कहते हैं।

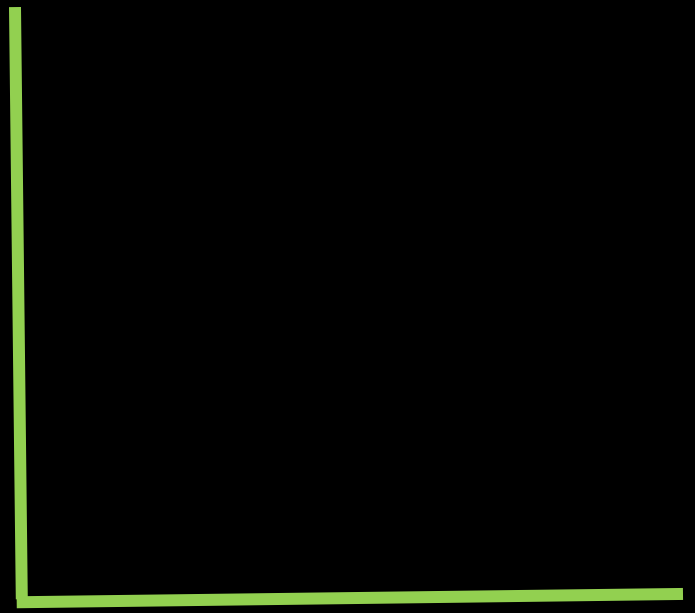

मांग का संकुचन (Contraction of Demand)

अन्य बातों के समान रहने पर जब वस्तु की कीमत अधिक हो जाने के कारण वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है, तब उपभोक्ता अपनी उसी मांग वक्र पर बाएँ या ऊपर की ओर स्थानांतरित होता है। इस स्थिति को मांग का संकुचन कहते हैं।

मांग वक्र का खिसकाव (Shifting of Demand Curve)

मांग वक्र के खिसकाव का अर्थ है मांग वक्र का अपनी आरंभिक स्थिति से बाईं या दाईं ओर खिसक जाना।

जब वस्तु की कीमत सामान रहें अर्थात वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन न होने पर भी अन्य कारणों के कारण जब मांग में परिवर्तन होता है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र का खिसकाव उत्पन्न होता है।

इस प्रकार का परिवर्तन दो प्रकार से होता है।

- **मांग में वृद्धि**
- **मांग में कमी**

मांग में वृद्धि (Increase in Demand)

जब वस्तु की मांग में उसकी कीमतों के अलावा अन्य तत्वों जैसे आय, फैशन आदि में परिवर्तन होने से परिवर्तन होता है अर्थात वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र बाएँ से दाएँ ओर स्थानांतरित होता है। जिसे मांग में वृद्धि कहते हैं।

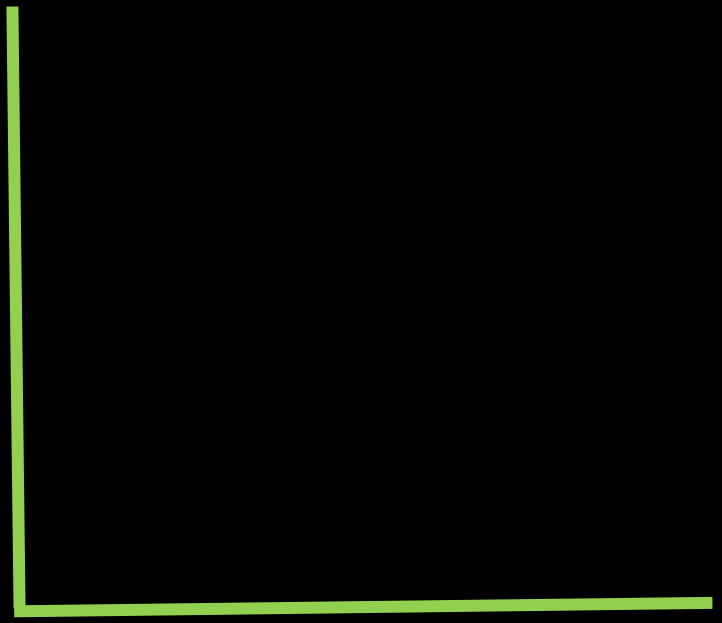

मांग में वृद्धि के कारण

- जब उपभोक्ताओं की आय में वृद्धि होती है।
- जब प्रतिष्ठापन वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है।
- जब पूरक वस्तु की कीमत में कमी आती है।
- जब फैशन या ऋतु में परिवर्तन वस्तु के लिये उपभोक्ताओं की रुचि तथा प्राथमिकता में परिवर्तन लाता है।
- फिर क्रेताओं की संख्या में वृद्धि होने पर।
- जब भविष्य में वस्तु की कीमत बढ़ने की संभावना हो।

मांग में कमी (Decrease in Demand)

जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त किन्हीं अन्य कारणों से उसी कीमत पर वस्तु की कम मात्रा या कम कीमत पर वस्तु की उतनी ही मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग में कमी कहते हैं।

इस स्थिति में मांग वक्र दाएँ से बाएँ स्थानांतरित होता है तथा मांग वक्र नीचे की ओर स्थानांतरित होता है।

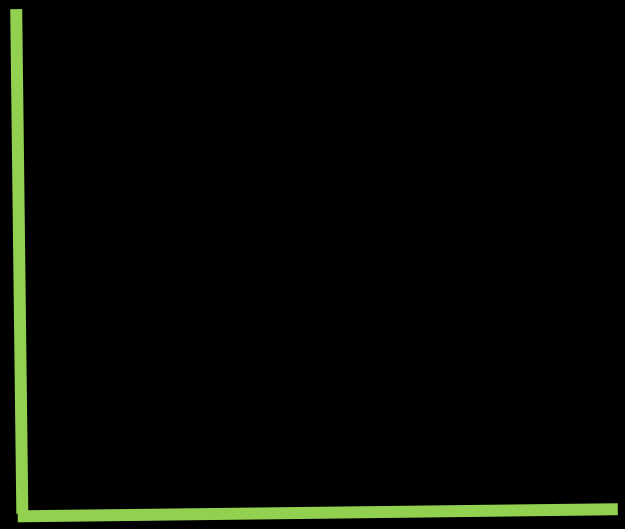

मांग में कमी के कारण

- उपभोक्ता की आय में कमी।
- प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में कमी।
- पूरक वस्तुओं की कीमत में वृद्धि।
- फैशन या जलवायु में परिवर्तन के कारण वस्तु के लिए उपभोक्ता की रुचियाँ प्राथमिकता में कमी।
- क्रेताओं की संख्या में कमी।
- निकट भविष्य में वस्तु की कीमत कम होने की संभावना।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** THE CLASS LINK

SUBSCRIBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

WhatsApp/ 7830010683

FOLLOW ME ON INSTAGRAM/ theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / Nakul Dhali